यू.जी. हिंदी - कोर - III - रीतिकाल : इतिहास एवं साहित्य

प्रथम वर्ष - द्वितीय सेमेस्टर - हिन्दी प्रतिष्ठा

1. रीति शब्द के अर्थ को स्पष्ट करते हुए रीतिकाल के नामकरण की सार्थकता पर प्रकाश डालिये।
2. क्या रीतिकाल को शृंगारकाल या अलंकृत काल कहना उचित है? कथन की तर्कपूर्ण मीमांसा कीजिये।
3. रीतिकालीन कवियों का वर्गीकरण किस आधार पर किया गया है? क्या आप इस वर्गीकरण से सहमत हैं।
4. रीतिकाल के कवियों का वर्गीकरण करते हुए रीतिकाल की प्रमुख रचनाओं पर प्रकाश डालिये।
5. रीतिकालीन काव्य की परिस्थितियों पर प्रकाश डालिये।
6. रीतिकालीन कविता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए दरबारी संस्कृति को स्पष्ट [redacted] करें।
7. "रीतिकालीन कविता तत्कालीन परिस्थितियों की उपज है।" इस कथन पर प्रकाश डालिये।
8. रीतिकाल की साहित्यिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों पर प्रकाश डालिये।
9. रीतिकाल की सामान्य विशेषताओं पर सोदाहरण प्रकाश डालिये।
10. "रीतिकाल की कविताओं में उपलब्ध अतिशय शृंगारिकता तत्कालीन समाज में व्याप्त विलासी प्रवृति का प्रतिबिंब है।" इस कथन की सम्यक समीक्षा कीजिये।
11. रीतिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिये।
12. रीतिमुक्त कविता के अभिप्राय को स्पष्ट करते हुए इस काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिये।
13. रीतिमुक्त काव्य की विशेषताओं पर उदाहरण सहित प्रकाश डालिये।
14. घनानंद किस वर्ग के कवि हैं? उनकी कविताओं से उदाहरण देते हुए उनके काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिये।

उत्तर-मध्यकाल (रीतिकाल)

1. रीतिकाल—नामकरण एवं वर्गीकरण

मध्यकालीन हिन्दी काव्य को सामान्यतः दो वर्गों में विभक्त किया गया है—पूर्व-मध्यकाल और उत्तर-मध्यकाल। इनमें से पूर्व-मध्यकाल को भक्तिकाल की संज्ञा दी गई है और उत्तर-मध्यकाल को रीतिकाल कहा गया है। **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** ने हिन्दी साहित्य के इतिहास में इस काल की समय सीमा संवत् 1700 वि. से 1900 वि. तक स्वीकार की है और इस काल की रचनाओं में रीति-तत्व की प्रधानता को लक्षित कर इसका नाम **'रीतिकाल'** रखा है। इस काल में अधिकांश कवियों ने लक्षण ग्रंथों की परिपाटी पर रीतिग्रंथ लिखे, जिनमें अलंकार, नायिका भेद, रस आदि काव्यांगों का विस्तृत विवेचन किया गया है। इस युग के कवि काव्यांग-चर्चा में गौरव का अनुभव करते थे और लक्षण-ग्रंथ लिखे बिना कवि के पांडित्य को स्वीकार नहीं किया जाता था। इस सम्बन्ध में टिप्पणी करते हुए **डॉ. भगीरथ मिश्र** ने लिखा है—**"रीतिकालीन कवि को रस, अलंकार, नायिका भेद, ध्वनि आदि के वर्णन के सहारे ही अपनी कवित्व प्रतिभा दिखाना आवश्यक था। इस युग में उदाहरणों पर विवाद होते थे। इस बात पर भी कि उसके भीतर कौन-सा अलंकार है, कौन-सी शब्द-शक्ति है अथवा कौन-सा रस या भाव है ?"** रीतिकाल में रीति निरूपण की जो प्रवृत्ति पाई जाती है, उसका प्रारम्भ भक्तिकाल में ही हो गया था। नंददास द्वारा रचित **'रस मंजरी'** और सूरदास कृत **'साहित्य लहरी'** में यह प्रवृत्ति परिलक्षित होती है। कतिपय अन्य भक्तिकालीन कवियों रहीम, सुंदरदास, कृष्णदास के काव्य में भी रीति-तत्व का समावेश हो चला था। अतः मतिराम, चिंतामणि, कुलपति मिश्र, भूषण, देव, भिखारीदास, गुमान मिश्र, प्रताप साहि, ग्वाल आदि कवियों ने रीति-ग्रंथ लिखकर युगीन प्रवृत्ति का ही परिचय दिया। शुक्ल जी ने इन्हीं कवियों द्वारा रचित ग्रंथों को लक्षित कर इस काल की प्रधान प्रवृत्ति 'रीति' को आधार बनाकर इसका नामकरण रीतिकाल किया।

आचार्य शुक्ल के रीतिकाल नाम को यद्यपि अधिकांश विद्वानों ने स्वीकार किया है, तथापि उस पर कुछ आक्षेप भी किए गए हैं। कुछ विद्वानों का तर्क है कि 'रीतिकाल' संज्ञा व्यापक नहीं है क्योंकि इसके अंतर्गत घनानंद, बोधा, आलम, ठाकुर, बिहारी जैसे वे प्रतिनिधि कवि नहीं आ पाते, जिन्होंने काव्यांग विवेचन करने वाला कोई लक्षण-ग्रंथ नहीं लिखा। रीतिकाल के अतिरिक्त अन्य नाम जो इस काल के लिए दिए गये हैं, वे हैं—**अलंकृतकाल, शृंगारकाल, कलाकाल** आदि। **मिश्रबंधुओं** ने इस काल में अलंकरण की पवृत्ति को परिलक्षित कर इसे **अलंकृत काल** कहा है। रीतिकाल के कवियों ने निश्चित् रूप से कविता सुन्दरी का अलंकरण किया है तथा काव्य में अलंकारों का सायास प्रयोग भी किया है, अतः मिश्र बंधुओं ने इसे अलंकृतकाल कहना अधिक उपयुक्त माना है। किन्तु यहाँ यह विचारणीय है कि अलंकार तो सभी कालों की कविता में मिल जायेंगे। साथ ही अलंकारों के अतिरिक्त अन्य काव्यांगों का निरूपण भी रीतिकालीन काव्य में हुआ है, अतः अलंकृत काल कहने से उन सबकी उपेक्षा हो जायेगी। यह भी उल्लेखनीय है कि मिश्र बंधु इस काल को अलंकृत काल कहते हुए भी इस काल में रीति-ग्रंथों की प्रचुरता को स्वीकार करते हैं—**"इस प्रणाली के साथ रीति ग्रन्थों का भी प्रचार बढ़ा और आचार्यत्व की वृद्धि हुई। आचार्य लोग तो स्वयं कविता करने की रीति सिखलाते थे।"**

कुछ अन्य विद्वान् रीतिकालीन काव्य में कलापक्ष की प्रमुखता को लक्षित कर इसे **कलाकाल** कहने के पक्ष में हैं, किन्तु यह मत भी स्वीकारने योग्य नहीं है। साहित्य में कलापक्ष एवं भावपक्ष परस्पर सम्पृक्त होते हैं तथा उनमें विभाजक रेखा खींच पाना कठिन है। कलाकाल कहने से ऐसी ध्वनि निकलती है जैसे रीतिकाल में भावपक्ष की नितांत उपेक्षा हुई है जबकि वस्तुतः ऐसा नहीं है। रीतिकालीन काव्य में हृदयपक्ष का भी सुन्दर उद्घाटन हुआ है।

15. रीतिमुक्त एवं रीतिबद्ध का अंतर स्पष्ट [redacted] कीजिए तथा रीतिमुक्त काव्य की प्रवृत्तियों पर सोदाहरण प्रकाश डालिये।

16. रीतिकालीन काव्य में रीतिमुक्त कवियों का योगदान बताइये।

17. रीतिमुक्त काव्य की परिभाषा देते हुए उसमें घनानंद का स्थान निर्धारित कीजिए।

18. रीतिबद्ध काव्य से क्या अभिप्राय है? रीतिबद्ध काव्य की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिये।

19. रीतिबद्ध काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों का विशद विवेचन कीजिए।

20. "रीतिबद्ध कवियों का प्रमुख उद्देश्य पांडित्य प्रदर्शन था।" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

21. रीतिबद्ध कविता के गुण-दोषों की विवेचना कीजिए।

22. रीतिकालीन कवियों के आचार्यत्व पर प्रकाश डालिये।

23. लक्षण ग्रंथ लिखने पर भी हिन्दी के रीतिबद्ध कवि आचार्य की कोटि में नहीं आते, क्यों! सप्रमाण उत्तर दीजिए।

24. केशव के आचार्यत्व पर संक्षिप्त टिप्पणी प्रस्तुत कीजिए।

25. "केशवदास कवि ही नहीं आचार्य भी है।" इस कथन की सम्यक व्याख्या कीजिए।

26. बिहारी के काव्य पर एक समीक्षात्मक टिप्पणी लिखिए।

27. "बिहारी रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि हैं।" समीक्षा कीजिए।

28. "घनानंद प्रेम के पीर के कवि हैं।" इस कथन पर प्रकाश डालिए।

29. "घनानंद के विरह वर्णन" पर सोदाहरण प्रकाश डालिये।

<u>टिप्पणी लिखें</u>

(क) बिहारी और उनकी सतसई।

(ख) घनानंद का काव्य।

संजय प्रियंवद
स. प्राध्यापक
हिन्दी विभाग, गोंडा कॉलेज, गोंडा

में पारंगत थे, उन्हें रीति पूर्णतः सिद्ध थी, अतः इन कवियों को रीतिसिद्ध कवि कहा गया। इस वर्ग के प्रतिनिधि कवि हैं—**बिहारी**। इनके द्वारा रचित बिहारी-सतसई यद्यपि लक्षण-ग्रंथ नहीं है, तथापि उसकी पृष्ठभूमि में 'रीति' सर्वत्र व्याप्त है। नायिका भेद का अनुशीलन किये बिना, अलंकारों की सूक्ष्म जानकारी किए बिना तथा हाव-भाव, रस, हेला आदि की पर्याप्त जानकारी किए बिना इस ग्रंथ को समझ लेना असंभव ही है।

तीसरे वर्ग में आने वाले कवियों ने न तो लक्षण ग्रंथ लिखे और न रीति की जानकारी का उपयोग करते हुए काव्य रचना की। इस प्रकार उन्होंने रीति के बंधन को पूर्णतः अस्वीकार करते हुए हृदय की स्वतंत्र वृत्तियों को काव्य का विषय बनाकर काव्य रचना की। ये पूर्णतः रीति के बंधन से मुक्त रहे, अतः इन्हें रीति मुक्त कवि कहा गया। इन कवियों को वर्ण्य विषय के आधार पर पुनः कई उपवर्गों में बाँटा जा सकता है, यथा—

(i) रीतिमुक्त शृंगारी कवि,

(ii) रीतिमुक्त प्रबंधकार,

(iii) रीतिमुक्त सूक्तिकार,

(iv) रीतिमुक्त भक्त कवि,

(v) रीतिमुक्त वीर कवि,

(vi) रीतिमुक्त नीतिकार।

इस स्थूल वर्गीकरण में काव्य विषय को प्रधानता दी गयी है। रीतिमुक्त वर्ग में आने वाले कवियों में प्रमुखता है शृंगारी कवियों की। **घनानंद, बोधा, आलम** और **ठाकुर** इस वर्ग के प्रमुख कवि हैं, जिन्होंने अपनी प्रेमानुभूतियों की हृदयस्पर्शी एवं मार्मिक व्यंजना करते हुए स्वच्छंद काव्य की रचना की। इन्हें इसी कारण रीतिकालीन स्वच्छंदवादी कवि भी कहा जाता है। इन कवियों का शृंगार निरूपण रीति परम्परा से विच्छिन्न हृदय की स्वतंत्र अनुभूतियों के आधार पर है, जिसमें लक्षण ग्रंथकारों की रूढ़ियों, परम्पराओं की उपेक्षा की गयी है। इनके काव्य में जो कुछ है, वह भावप्रवण हृदय की सच्ची अनुभूति है, जिसमें कृत्रिमता का लेश भी नहीं है।

रीतिमुक्त प्रबंधकारों में वे कवि हैं, जिन्होंने रीतिकालीन मुक्तक परम्परा से अलग प्रबंध-काव्यों की रचना की है। **लाल कवि** ने छत्रप्रकाश, **सूदन** ने सुजान चरित की रचना रीतिमुक्त प्रबंधकार के रूप में की है। रीतिकाल के कुछ अन्य कवियों ने नीतिपरक सूक्तियाँ लिखकर जनोपयोगी साहित्य की रचना की है। **वृंद, गिरधरदास, घाघ, बेताल** इस वर्ग में आने वाले रीतिमुक्त सूक्तिकार एवं नीतिकार हैं। घाघ की कृषि सम्बन्धी सूक्तियाँ पर्याप्त लोकप्रिय हुई हैं। कुछ अन्य कवियों ने वीर रस के फुटकल छंद लिखे हैं तथा कुछ ने भक्ति और वैराग्यपरक काव्य की रचना की है, उन्हें भी रीतिमुक्त कवियों में ही स्थान दिया गया है।

रीतिकाल के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ—रीतिकालीन साहित्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है, किन्तु यहाँ हम कतिपय प्रमुख कवियों और उनकी रचनाओं की सूची प्रस्तुत कर रहे हैं—

(1) रीतिबद्ध कवि

(i) **चिंतामणि**—काव्य विवेक, शृंगार मंजरी, कविकुल कल्पतरु आदि।

(ii) **मतिराम**—रसराज, अलंकार पंचायिका, सतसई।

(iii) **भूषण**—अलंकार प्रकाश, छंदोहृदय प्रकाश, शिवराजभूषण, शिवावावनी, छत्रसाल दशक।

(iv) **जसवंत सिंह**—अनुभव प्रकाश, आनंदविलास, भाषाभूषण।

(v) **कुलपति मिश्र**—रस रहस्य, नख शिख।

(vi) **देव**—भाव विलास, भवानी विलास, रस विलास, काव्य रसायन आदि।

(vii) **पद्माकर**—जगत् विनोद, पद्माभरण।

(viii) **सुरति मिश्र**—अलंकारमाला, काव्य सिद्धान्त, रस रत्नाकर, शृंगार सागर।

(ix) **सोमनाथ**—रसपीयूष निधि, शृंगार विलास, प्रेम पचीसी।

(x) **भिखारीदास**—काव्यनिर्णय, शृंगार निर्णय, छंदप्रकाश।

(xi) **कृष्णकवि**—अलंकार कलनिधि, गोविंद विलास।

(xii) **ग्वाल**—नखशिख, अलंकार भ्रमभंजन, रसरूप, कवि दर्पण आदि।

आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने इस काल को **'शृंगार काल'** की संज्ञा प्रदान की है। रीतिकाल में शृंगार रस की प्रचुरता है—काव्यांग निरूपण में भी तथा अन्य रचनाओं में भी, अतः इस आधार पर इसे शृंगार काल कहना अनुपयुक्त नहीं है। **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल** ने इस सम्भावना की ओर पहले ही अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में संकेत कर दिया है—**"वास्तव में शृंगार और वीर, इन्हीं दो रसों की कविता इस काल में हुई। प्रधानता शृंगार की ही रही। इससे इस काल को रस के विचार से कोई शृंगार काल कहे तो कह सकता है।"** स्पष्ट है कि शुक्लजी स्वयं इस नाम को स्वीकार नहीं करते, वे तो इसे रीतिकाल ही कहा जाना उचित मानते हैं, कोई कहे तो कहता रहे। शृंगारकाल की तुलना में रीतिकाल नाम इसलिए भी उचित है, क्योंकि शृंगारकाल कहने से इस काल में रचित अन्य विषयों—वीर, भक्ति, नीतिकाव्य की उपेक्षा हो जाती है। आश्चर्य की बात तो यह है कि मिश्र जी ने इस काल का नामकरण तो शृंगारकाल किया है किन्तु इसका वर्गीकरण 'रीति तत्व' को ध्यान में रखकर किया है। वे रीतिकालीन कवियों की तीन श्रेणियाँ बनाते हैं—रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध और रीतिमुक्त कवि। ऐसी स्थिति में हम यह मानने के लिए बाध्य हैं कि इस काल में रीति तत्व की प्रधानता थी, अतः इसका उचित नामकरण रीतिकाल ही हो सकता है। आज हिन्दी साहित्येतिहास में यही नाम प्रायः सर्वस्वीकृत है।

रीति शब्द की व्याख्या—संस्कृत काव्यशास्त्र में 'रीति' शब्द का प्रयोग **वामन** ने काव्यात्मा के लिए करते हुए **'रीति सम्प्रदाय'** नाम से एक अलग सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया। वे **'विशिष्ट पद रचना रीतिः'** कहकर इसे विशेष प्रकार की पद रचना मानते हैं। सामान्य रूप से 'रीति' का अर्थ पद्धति, मार्ग या शैली है। संस्कृत काव्यशास्त्र में प्रमुख रूप से 'रीति' को काव्य रचना पद्धति के अर्थ में ही ग्रहण किया गया है किन्तु हिन्दी में 'रीति' शब्द का प्रयोग इस अर्थ में नहीं हुआ। रीतिकाल तक आते-आते रीति शब्द **काव्यांग निरूपण** के लिए प्रयुक्त होने लगा और **रीतिग्रंथ** उन ग्रंथों को कहा जाने लगा जिनमें विभिन्न काव्यांगों—रस, अलंकार, शब्दशक्ति, छंद, नायिका भेद आदि के लक्षण और उदाहरण दिए गए हों। इन रीति ग्रंथों के लिए एक अन्य नाम **लक्षण ग्रंथ** भी चल पड़ा।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने रीति शब्द के स्वरूप एवं अर्थ को निश्चित करते हुए यह भी निर्धारित कर दिया कि रीति-ग्रंथ या लक्षण-ग्रंथ लिखने वाले ही रीति कवि नहीं हैं, अपितु ऐसे कवि जिनका काव्य के प्रति दृष्टिकोण भी रीतिपरक हो, इसी वर्ग के अन्तर्गत आयेंगे। बिहारी ने यद्यपि कोई लक्षण-ग्रंथ नहीं लिखा तथापि उनके काव्य में रीतिपरकता का तत्व विद्यमान है और इसीलिए वे रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि हैं।

रीतिकाल के लक्षण ग्रंथकारों ने अपने रीति-ग्रंथों की रचना प्रायः काव्य-शिक्षा देने के उद्देश्य से की है। वे रस रीति, अलंकार रीति, छंद रीति आदि की विवेचना करने का प्रयास कर रहे थे, अतः संस्कृत काव्यशास्त्र का आधार लेकर काव्यांग निरूपण में प्रवृत्त हुए। काव्यांग निरूपण की यह परम्परा भी उन्हें पूर्ववर्ती भक्तिकालीन कवियों से विरासत में प्राप्त हुई थी, इसका उल्लेख किया जा चुका है, क्योंकि नंददास, रहीम, आदि इसका सूत्रपात पहले ही कर चुके थे।

रीतिकालीन काव्य का वर्गीकरण—सामान्यतः रीतिकालीन काव्य का वर्गीकरण 'रीति' को केन्द्र बनाकर तीन वर्गों में किया गया है—

(अ) **रीतिबद्ध कवि,**

(ब) **रीतिसिद्धि कवि,**

(स) **रीतिमुक्त कवि।**

वे कवि जिन्होंने लक्षण-ग्रंथों की रचना की और संस्कृत काव्यशास्त्र के आधार पर काव्यांग निरूपण किया, प्रथम वर्ग में आने वाले रीतिबद्ध कवि हैं। ये 'रीति' में बँधे होने के कारण रीतिबद्ध कहे गए। **देव, मतिराम, चिन्तामणि** आदि इसी प्रकार के रीतिबद्ध कवि हैं।

द्वितीय वर्ग में वे कवि हैं, जिन्होंने लक्षण-ग्रंथ तो नहीं लिखे, किन्तु 'रीति' की जानकारी का पूरा-पूरा उपयोग करते हुए काव्य रचना की। इन कवियों की रचनाओं का अनुशीलन करने के लिए पाठक को रीति की जानकारी होनी अपेक्षित है। 'रीति ' की पर्याप्त पृष्ठभूमि जाने बिना न तो ऐसे ग्रंथों की रचना की जा सकती थी और न ही इन्हें समझा जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो कह सकते हैं कि इस वर्ग के कवि रीतिशास्त्र